International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय अर्थव्यवस्था में हुए आर्थिक सुधार और उसका भविष्य पथ : एक अध्ययन

अंजु चौधरी

एम.ए. (अर्थशास्त्र), पीएच.डी., पटना विश्वविद्यालय

सार (Abstract): भारत की आजादी के 77 साल पुरा होने पर भारतीय अर्थव्यवस्था की यात्रा उन परिवर्त्तनों, चुनौतियों, बाधाओं तथा अवसरों को दर्शाती हैं जब 1990 के दशक में आर्थिक असंतुलन का सामना कर रहे भारत के समक्ष एक नई आर्थिक सुधार नीति को अपना कर मिश्रित या बाजार अर्थव्यवस्था के पक्ष में आर्थिक प्रणालियों का पुनर्गठन करना था। आर्थिक सुधार की प्रक्रिया में उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण की नीति अपना कर आर्थिक सुधारों की दिशा में चरणबद्ध क्रमिक पहल किए गए। डिजिटल बुनियादी ढांचा का विस्तार, आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स जैसे तकनीकि विकास की आर्थिक चुनौतियों और भारत की कुशल कार्यबल को ध्यान में रखते हुए प्रासंगिक तथा उचित आर्थिक सुधार, 2047 तक देश के लिए उज्जवल और सम्पूर्ण विकास की संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त करेंगें।

कुँजीशब्द (Keyword): 1. अर्थव्यवस्था, 2. आर्थिक–सुधार, 3. निवेश, 4. वित्तीय–क्षेत्र

परिचयः

किसी भी राष्ट्र की प्रगति तथा उनके विकास पथ को आकार देने में उस देश की अर्थव्यवस्था महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत की आजादी के 77 साल पूरा होने पर इसकी अर्थव्यवस्था की यात्रा उन परिवर्तनों, चुनौतियों, बाधाओं तथा अवसरों को दर्शाती है जिसे पार कर भारत 3.7 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की जीडीपी के साथ स्वयं को दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने हेतु अवसरों का लाभ उठाया है। अगले तीन वर्षों में भारत के तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की उम्मीद है जब इसका जीडीपी 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर हो जएगा। इस वृद्धिकारी प्रक्रिया के आधार पर सरकार ने भारत को 2047 तक एक विकसित देश बनाने का लक्ष्य रखा है। इस अध्ययन में द्वितीयक आँकड़े का उपयोग कर भारत की **आर्थिक सुधार** के यात्रा का विश्लेषण का प्रयास है।

भारत की आर्थिक यात्रा आजादी के बाद के प्रारंभिक वर्षों से ही शुरु हो गयी थी जब 1951 में योजना आयोग द्वारा पंचवर्षीय योजना लागू की गयी थी, जिसमें मिश्रित अर्थव्यवस्था का मॉडल अपनाकर समाजवादी नीतियों को बाजार अर्थव्यवस्था के घटकों के साथ जोड़ा गया था। इसमें सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों की स्थापना तथा आयात प्रतिस्थापना के माध्यम से राष्ट्र निर्माण, औद्योगीकरण तथा आत्मनिर्भरता प्राप्त करने को ध्यान केन्द्रित किया गया था। 1990 का दशक **भारतीय अर्थव्यवस्था** के लिए एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था। उस समय देश को एक व्यापक **आर्थिक असंतुलन** का सामना करना पड़ा था जिससे सरकार को **संरचनात्मक सुधार** करने के लिए प्रेरित किया। **आर्थिक सुधार** किसी देश की आर्थिक नीतियों में एक बड़ा बदलाव है। ऐतिहासिक रूप से देशों ने इसके तहत मिश्रित या बाजार अर्थव्यवस्था के पक्ष में अपने आर्थिक प्रणालियों का पुनर्गठन किया है।

1991 में भारत सरकार ने महत्त्वपूर्ण आर्थिक सुधार प्रस्तुत किए जो इस दृष्टि से वृहद प्रयास थे कि इनमें विदेश व्यापार उदारीकरण, वित्तीय उदारीकरण, कर सुधार और विदेशी निवेश के प्रति आग्रह शामिल था।[1] इन उपायों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने मे मदद की। तबसे भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत आगे निकल आयी है। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. **पी.वी. नरसिम्हा राव** को **भारतीय आर्थिक सुधार** के जनक के रूप में जाना जाता है, जिन्ह 9 फरवरी 2024 को **भारतरत्न** की उपाधि से सम्मानित किया गया है। **पी.वी. नरसिम्हा राव** तथा तत्कालीन वित्तमंत्री **डॉ मनमोहन सिंह** की जोड़ी ने 1991 में भारत के आर्थिक सुधार की प्रक्रिया में **उदारीकरण**, **निजीकरण**, **वैश्वीकरण** की नीति जिसे **एल.पी.जी (Liberalisation, Privatisation,Globalisation) नीति** भी कहा जाता है, अपना कर सुधारों की दिशा, पथ और लक्ष्य तय किए गए। इसके अंतर्गत सरकार द्वारा 1991 की आर्थिक सुधारों के तीन चरणों की घोषणा की गयी जिसका एक संक्षिप्त अवलोकन इस प्रकार है।[2]

प्रथम चरण के सुधारः 1991 में शुरू किए गए इस चरण का मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्था में निजी भागीदारी को बढाना था, जिस दिशा में निम्नलिखित बड़े बदलाव की शुरूआत हुई–

1. उदारीकरण के अंतर्गत लाइसेंस राज को खत्म कर लाइसेंस प्रक्रिया को शिथिल किया गया (विशष कर रसायन, दवा, अस्त्र–शस्त्र, रक्षा उद्योग आदि को छोड़ कर)। 1969 में लागू एम.आर.टी.पी. एक्ट की समाप्ति के द्वारा निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन।
2. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रेत्साहित किया गया। निर्यात–आयात व्यवस्था का उदारीकरण, **फेरा (FERA)** का **फेमा (FEMA)** परिवर्तन कर 2000 के दशक के प्रारम्भ में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को और अधिक उदार बना कर वैदेशिक क्षेत्र में सुधार।
3. बैंकिंग, बीमा और सुरक्षा बाजार में अनुकुल परिवर्त्तन कर वित्तीय क्षेत्र में सुधार।

[1] J. D. Sachs, A. Varshney, and N. Bajpai, *India in the Era of Economic Reforms* (New Delhi: Oxford University Press, 1999), p.1.

[2] Economic Survey 1991-92 and 2000-01 (N. Delhi: Ministry of Finance, GoI); Union Budget, 2001-02 (N. Delhi: Ministry of Finance, GoI); and other official announcements.

4. निजी भागीदारी के लिए प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था को आकर्षक बनाकर कर प्रणाली में सुधार।
5. सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में विनिवेश के अलावा उन्हें लाभ की ओर उन्मुक्त करना।

द्वितीय चरण के सुधारः वर्ष 2000–01 से शुरू होने वाले इन सुधारों का उद्देश्य पहले चरण के सुधारों के लिए अनुकुल माहौल बनाना था जिसके लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए–

1. कारक बाजार सुधार का उद्देश्य प्रशासित मूल्यतंत्र को समाप्त करना है। जिनमें सरकार पेट्रोलियम उत्पाद, उर्वरक, दवाएँ, फार्मास्युटिकल, चीनी जैसी वस्तुओं की बिक्री मूल्य निर्धारित करती है। इन्हें सुधारों की रीढ माना जाता है क्योंकि इसके बिना निजी क्षेत्र को अर्थव्यवस्था में निवेश के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जा सकता है।
2. निजीकरण को बढावा दिया गया जिसके अंतर्गत वे सभी नीतियाँ अपनायी गयी जिसके माध्यम से सरकार निजी निवेश के लिए अधिक अवसर प्रदान करती है। भारत की नई औद्योगिक नीति 1991 इसका सर्वोत्तम उदाहरण है।
3. आर्थिक सुधार नीति का मूल उद्देश्य सामाजिक–आर्थिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों जैसे बिजली, परिवहन, जल, कृषि अनुसंधान, बैंक, बीमा, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में निवेश करना था जिससे बेहतर कारोबारी माहौल बनाने में मदद मिली तथा कम्पनियों के लिए भारत में काम करना आसान हुआ। परिणामतः केन्द्र सरकार का प्रभावी पूँजीगत व्यय 2013–14में सकल घरेलू उत्पाद 2.8 प्रतिशत से बढकर 2022–23 में 3.8 प्रतिशत हो गया।[3]
4. सकल राजकोषीय घाटे पर काबू पाने के लिए सरकार द्वारा **राजकोषीय उत्तरदायित्व तथा बजट प्रबंधन (FRBM) अधिनियम** बनाया गया। 1991 के आर्थिक सुधार के बाद आर्थिक पुनरूत्थान के दौरान जमा हुए खराब ऋणों के बोझ से दबी बैंकिंग प्रणाली की ब्याज दरों को विनियमित किया गया तथा **सरफेसी कानून 2002** के माध्यम से सहायता प्रदान कर वित्तीय क्षेत्र में सुधार किया गया।
5. प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने के लिए आवश्यक मूल्य ह्रास की अनुमति देते हुए विनिमय दर को लचीला बनाया गया जिसमें दो चरणों में रूपये का 22 प्रतिशत अवमूल्यन किया गया जिससे रूपये का विनिमय दर प्रति अमेरिकी डॉलर रूपये 21 से गिरकर 27 रूपये प्रति अमेरिकी डॉलर हो गया।
6. उद्यमशीलता को बढावा दे कर वैश्विक निवेश को आकर्षित किया गया जिसके कारण वास्तविक विकास दर 1993 से 2000 के बीच 5.5 प्रतिशत से बढकर 6.3 प्रतिशत हो गया।

तृतीय चरण के सुधारः वर्ष 2002 में शुरू किए गए इन सुधारों का उद्देश्य जनता को लाभ पहुँचाना अर्थात समावेशी सुधार था। इस चरण में निम्नलिखित सुधार हुए –

1. पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत किया गया।
2. इसके साथ ही कुछ दीर्घकालिक सुधार जैसे राजकोषीय समेकन, अनुदान, सुधारों में राज्यों की अधिक भूमिका, राज्यों को उच्च कर हस्तांतरण आदि पर जोर दिया गया।
3. शासन में भ्रष्टाचार पर नियंत्रण लगाने तथा सब्सिडी व्यवस्था को तर्कसंगत बनाने के उद्देश्य से आधार अधिनियम का बनाया जाना आदि।

उपर्युक्त आर्थिक सुधारों के क्रम में देश में सुधारों की गति लगातार जारी है। इसमें भारत की संकल्पना एक सूचना प्रौद्योगिकी सक्षम देश के रूप में किया गया जिसे **परिवर्त्तनकारी सुधार** के रूप में वर्ष 2014–15 में अपनाया गया। बदलते समय के साथ 2017–18 में विशेषज्ञों[4] द्वारा सरकार को बड़े पैमाने पर वृद्धिशील सुधार को आगे बढाने की सलाह[5] दी गई। 2019–20 में सरकार ने अपनी मजबूत जनादेश का उपयोग करके तेज सुधार[6] की सलाह अपनाया, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक सुधारों का **भविष्य पथ** सुनिश्चित हुआ जिसे हम आर्थिक सुधार के **चौथे चरण** के रूप में देखते हैं। इस चरण में निम्नलिखित नीतिगत फैसले लिए गए –

1. 1999 की नई दूरसंचार नीति ने भारत में आई.टी. क्षेत्र में क्रांति ला दी। 2000 के दशक की शुरूआत में **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश** को और अधिक उदार बनाया गया जिससे अन्य क्षेत्रों का लाभ के साथ विनिवेष तथा निजीकरण की नीति ने गति पकड़ी। परिणामतः जहाँ 2003–08 मे वैश्विक विकास दर औसतन 4.8 प्रतिशत थी वहीं भारतीय अर्थव्यवस्था ने 8 प्रतिशत से अधिक की औसत विकास दर हांसिल किया।
2. 2014 के बाद से भारत में कराधान तंत्र में भी महत्त्वपूर्ण बदलाव किए गए। 1 जुलाई 2017 से **एकीकृत वस्तु और सेवाकर (GST)** को अपनाना, कॉरपोरेट और आयकर की दरों में कमी, सॉवरेन वैल्यू फंड तथा पेंशन फंड को कर में छूट, लाभांश वितरण

[3] Economic Survey 2000-01 and 2022-23 (New Delhi: Ministry of Finance, GoI); Union Budget, 2022-23 (N. Delhi: Ministry of Finance, GoI)
[4] I. J. Ahluwalia, 'Industry', in The New Oxford Companion to Economics in India, vol. 2, K. Basu and A. Maertens, eds. (New Delhi: Oxford University Press, 2012), pp. 371-75.
[5] Economic Survey 2017-18, vol. 1, (New Delhi: Ministry of Finance, GoI), p. 140.
[6] Economic Survey 2019-20, vol. 2, (New Delhi: Ministry of Finance, GoI), pp. 1-4.

करों में छूट तथा पूर्वव्यापी कर को समाप्त करने सहित अन्य करनीति में सुधार से व्यक्तियों तथा व्यवसायों पर कर का बोझ कम हो गया।

3. **आत्मनिर्भर भारत** तथा **मेक इन इंडिया** जैसे कार्यक्रम का उद्देश्य भारत की विनिर्माण क्षमताओं तथा विभिन्न उद्योगों में निर्यात को बढावा देना।
4. निजी क्षेत्र के लिए व्यवसायिक अवसर बढाने के लिए रक्षा, खनन तथा अंतरिक्ष सहित रणनीतिक क्षेत्र को खोल दिया गया है।
5. **कम्पनी अधिनियम 2013** के तहत कारोबार सुगमता में सुधार हेतु 1400 से अधिक डिफॉल्ट मामले को अदालती कार्यवाही का सहारा लिए बिना हल किया गया। 4 लाख से अधिक कम्पनियों ने दंड से बचने के लिए स्वेच्छा से पिछले डिफॉल्ट को ठीक किया है। सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में सरकार की उपस्थिति को केवल कुछ रणनीतिक क्षेत्रों तक सीमित करने के लिए नयी सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम नीति लागू की गई है।
6. प्रौद्योगिकी तथा डिजीटल प्लेटफॉर्म को एकीकृत कर भारत की कोर डिजीटल अर्थव्यवस्था 2014 और 2019 के बीच समग्र आर्थिक विकास की तुलना में 2.4 गुना बढी है।
7. 8 नवंम्बर 2016 को उच्च मूल्य के करेंसी नोटों का विमुद्रीकरण किया गया जिसका उद्देश्य भ्रष्टाचार, कर चोरी, नकली मुद्रा का प्रचलन और आतंकवाद पर अंकुश लगाना था।
8. काले धन के सृजन तथा दुरूपयोग को रोकने के लिए **बेनामी कानून** का अधिनियमन आदि।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त विवेचनाओ ंको देखने से प्रतीत होता है कि आर्थिक सुधार ने भारत को एक नयी गति प्रदान की है। जहाँ डिजीटल बुनियादी ढाँचे में वित्त तथा बाजारों तक बेहतर पहुँच बनायी है वहीं लागत में कमी तथा कर संग्रह में वृद्धि की सुविधा प्रदान की है। अकाउंट एग्रीगेटर ढाँचा छोटे व्यवसायों के लिए अधिक सुलभ ऋण को सक्षम बनाएगा जिससे समग्र विकास को बढावा मिलेगा। पिछले कुछ वर्षों में विकसित मजबूत वित्तीय क्षेत्र कुशल ऋण प्रावधान सुनिश्चित कर आने वाले समय में अधिक निवेश और खपत के माध्यम से आर्थिक विकास को गति प्रदान करेगा। भारतीय अर्थव्यवस्था में किए गए नये युग के सुधार, **अमृतकाल** (भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष से 100 वर्ष तक की अवधि) के दौरान इसके विकास की नींव रखते हैं। पिछले कुछ वर्षों में विकसित मजबूत वित्तीय क्षेत्र, कुशल ऋण प्रावधान आने वाले वर्षों में अधिक निवेश और खपत के माध्यम से गतिशील आर्थिक विकास में योगदान देगा। उच्चस्तरीय विनिर्माण तथा मध्यम अवधि में मूल्यवर्धित सेवाओं के तीव्र विकास के लिए तथा व्यापक पारिस्थितिक तंत्र सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल बुनियादी ढाँचा का विस्तार करना होगा। सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रों में अनुसंधान एवं विकास के लिए कुशल कार्यबल की उपलब्धतां की आवश्यकता होगी।

संदर्भ व संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. J. D. Sachs, A. Varshney, and N. Bajpai, *India in the Era of Economic Reforms* (New Delhi: Oxford University Press, 1999), p.1.
2. रमेश सिंह, भारतीय अर्थव्यवस्था, McGraw Hill Education (India) Pvt. Ltd., 2024-25. pp. 66-70.
3. I. J. Ahluwalia, 'Industry', in The New Oxford Companion to Economics in India, vol. 2, K. Basu and A. Maertens, eds. (New Delhi: Oxford University Press, 2012), pp. 371-75.
4. Economic Survey 1991-92 and 2000-01 (N. Delhi: Ministry of Finance, GoI); Union Budget, 2001-02 (N. Delhi: Ministry of Finance, GoI); and other official announcements.
5. Economic Survey 2017-18, vol. 1, (New Delhi: Ministry of Finance, GoI), p. 140.
6. Economic Survey 2019-20, vol. 2, (New Delhi: Ministry of Finance, GoI), pp. 1-4.
7. Economic Survey 2022-23 (New Delhi: Ministry of Finance, GoI); Union Budget, 2022-23 (New Delhi: Ministry of Finance, GoI).
8. योजना, अगस्त, 2023, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, pp. 23-26.
9. www.indiabudget.gov.in